ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-6* Issue-1* April-2021
Anthology : The Research

भूमण्डलीयकरण की संस्कृति और भारतीय समाज
Culture of Globalization and Indian Society

Paper Submission: 03/04/2021, Date of Acceptance: 14/04/2021, Date of Publication: 22/04/2021

कमलेश कुमार सिंह
सहायक प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
राम स्वरूप ग्राम उद्योग
पी0जी0 कालेज,
पुखरायां, कानपुर देहात,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भूमण्डलीकरण की संस्कृति का भारतीय समाज और संस्कृति पर गहरा प्रभाव पड़ा है। यद्यपि इसका प्रभाव दुनिया के अन्य देशो पर भी किसी न किसी न किसी रूप में अवश्य दिखाई देता है किन्तु भारतीय परिपेक्ष्य में देखने पर इसका प्रभाव समाज और संस्कृति के अलावा हमारी अर्थव्यवस्था, शिक्षा प्रणाली, प्रौधोगिकी, चिकित्सा, जीवन शैली, आदि क्षेत्र में भी देखने को मिलता है प्रसिद्ध समाजषास्त्री एंथिनी गिडिंग्स ने लिखा है कि '' वैश्विकरण केवल आर्थिक प्रक्रिया नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनो के एक समुच्चय से सम्बन्धित है'' भूमण्डलीकरण का प्रभाव न केवल भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज पर पड़ा है बल्कि इसका प्रभाव विचारों मूल्यों ज्ञान निर्माण सूचना प्रौधोगिकी आदि पर भी पड़ा है भारतीयों की भेषभूषा और रहन–सहन में भी बदलाव आया है यही नही स्त्री पुरूषों के आपसी सम्बन्धों के साथ–साथ पारिवारिक सम्बन्धों में भी बदलाव देखने को मिलता है अधिकांश लोग स्वतंत्र और एकाकी जीवन जीना पसन्द करते हैं, भूमण्डलीकरण से एक तरफ जहाँ हमारी सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत नष्ट होने के कगार पर है वहीं हमारे भारतीय समाज के ऊपर वैष्विक संस्कृति थोपी जा रही है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे संस्कारों पर भी पड़ रहा है हमारी परम्परायें और मूल्य भी परिवर्तित हो रहे हैं। नई पीढ़ी की सोच तथा प्राथमिकता भी बदल रही है। हमारी आने वाली पीढ़ी धर्म जाति लिंग जैसे विषयों को गौड़ मानकर आर्थिक विकास को प्राथमिकता दे रही है।

The culture of globalization has had a profound impact on Indian society and culture. Although its effect is definitely visible on other countries of the world in some form or the other, but when viewed from the Indian perspective, its effect on society and culture, apart from our economy, education system, technology, medicine, lifestyle, etc. get to see The famous sociologist Anthony Giddings has written that "Globalization is not only related to economic process but a set of changes taking place in social, cultural, economic and political fields". Rather, it has had an impact on ideas, values, knowledge, information technology etc. There has also been a change in the dress and living style of Indians, not only this, there is a change in the relationship between men and women as well as in family relations. Most of the people like to live independent and lonely life, on one hand our age-old cultural heritage is on the verge of destruction due to globalization, while our Indian society is being imposed with global culture. Which is having a direct effect on our values, our traditions and values are also changing. The thinking and priorities of the new generation are also changing. Our coming generation is giving priority to economic development by considering subjects like religion, caste, gender as gaur.

मुख्य शब्द : एकरूपता, सजातीयकरण, परिवर्धित, लिव इन रिलेशन शिप, आत्मसात।
Uniformity, homogeneity, enhanced, live in relationship, assimilation.

उद्देश्य :

भूमण्डलीकरण के दौर में भारतीय समाज के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों में हो रहे बदलाव की चर्चा करना, तथा इसके प्रभाव को ध्यान में रखते हुए भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को अक्षुण्य रखना तथा इसे समुचित दिशा देना।

प्रस्तावना

भूमण्डलीकरण का आशय विश्व ग्राम की संकल्पना से जुड़ा है। जिसका तात्पर्य वैश्विक व्यापारिक सम्बन्धों को संदर्भित करता है। जिसमें दूर–दराज के लोगों के बीच आपसी सम्बन्धों की प्रगाढ़ता, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने, व्यापारिक सम्बन्धों को स्थापित करने के साथ–साथ संस्कृति के आदान–प्रदान को भी इंगित करता है। व्यापक दृष्टिकोण भूमण्डलीकरण का प्रत्यक्ष सम्बन्ध मानव विकास, गरीबी उन्मूलन, व्यापार, रोजगार के अलावा महिला एवं पर्यावरणीय विषयों के अतिरिक्त अन्य महत्वपूर्ण विषयों से है। भूमण्डलीकरण के परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था में व्यापार और बाजार में एकरूपता स्थापित हो देखने को मिलती है। जिसके परिणामस्वरूप विश्व के सभी देशों में वस्तुओं की कीमत लगभग समान हो जाती है। भूमण्डलीकरण के इस दौर मे विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन उपभोक्ता की अभिरूचि, जीवन शैली के साथ–साथ सांस्कृतिक परिवर्तन भी देखने को मिलता है। भूमण्डलीकरण की संस्कृति को ध्यान में रखते हुए यदि भारतीय अर्थव्यवस्था को देखा जाये नब्बे के दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण के साथ–साथ, कृषि, उद्योग, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विनियोग सेवा आदि के क्षेत्रों में इसका काफी प्रभाव पड़ा जिसने कि भारतीय संस्कृति और समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

यदि हम वैश्विक पटल पर वर्तमान संस्कृतियों का आकलन करें तो हम पाते हैं कि आज सभी संस्कृतियों में सजातीयकरण अर्थात हमें संस्कृतियों के समान हो जाने की प्रवृत्ति दिखायी देती कुछ विद्वान आज यह भी कहते हैं कि आज के वर्तमान की प्रवृत्ति ग्लोबलाइजेशन या भू–स्थानीयकरण की दिशा में बढ़ने की है जिसे हम स्थानीय (ग्लोबल और लोकल) के मिश्रण को परिवर्द्धित रूप में देख पाते है। सजातीयकरण बनाम संस्कृति का वैश्वीकरण के रूप में यदि देखा जाये तो इसका मनुष्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रभाव पड़ा है। इसी क्रम में यदि पारिवारिक संरचना को देखा जाए तो, वैश्वीकरण से संयुक्त परिवार टूटने के कगार पर हैं, वहीं एकल परिवारों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, यही नहीं वर्तमान वैश्विक परिदृश्य को यदि देखा जाए तो समाज में आज वृद्धाश्रमों की संख्या निरन्तर बढ़ रही है, लोग एकाकी परिवार में अकेले घुटनभरी जिन्दगी जीने से वृद्धाश्रमों में रहना ज्यादा पसन्द कर रहे हैं। आज के वृद्धजन अपने पारिवारिक ढांचे को तार–तार होते देखने के बजाए अपनी भावनाओं को इस हद तक समझा पाने में सक्षम है कि वे वृद्धाश्रम में ही रहें। इसके अलावा वैश्वीकरण की संस्कृति ने विवाह, त्यौहार और भोजन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को भी काफी हद तक प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण के ही परिणामस्वरूप आज विवाह जैसी महत्वपूर्ण संस्थाओं में कमी आ गयी है। लोग विवाह के महत्व को ही कम करके आंक रहे हैं, इतना ही नहीं आज के दौर में तलाक सम्बन्धी घटनाओं में वृद्धि, लिव इन रिलेशनशिप एवं एकल अभिभावक (Single Parenting) सम्बन्धी प्रवृत्ति में अप्रत्याशित वृद्धि देखने को मिल रही है, इसके पहले विवाह को एक संस्कार के रूप में मान्यता प्राप्त थी, किन्तु आज इसको संविदा के रूप में अपनाया जा रहा है। अगर हम त्यौहारों की बात करें तो आज कल के वैश्विक त्यौहार वैलेण्टाइन डे, फ्रेण्डशिप डे जैसे त्यौहारों का प्रचलन बढ़ा है जिसके परिणामस्वरूप आज हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में भी बदलाव देखा जा सकता है। इतना ही नहीं ग्लोबलाइजेशन के इस युग में हमारे भोजन व मनोरंजन को भी काफी हद तक प्रभावित किया है। यदि आज की खाद्य शैली को देखा जाए तो विभिन्न प्रकार के व्यंजनों की उपलब्धता में वृद्धि हुयी है, आज भारत में भी विभिन्न प्रकार के विदेशी व्यंजन खान–पान में शामिल हो चुके हैं इसके साथ ही साथ हमारे मनोरंजन के साधन में भी वृद्धि हुयी है। हॉलीवुड की फिल्में, चाइनीज, कोरियन, जर्मन फिल्म शहरी युवाओं को काफी प्रभावित कर रही हैं वे इन्हे स्थानीय भाषाओं में डब करा कर देखने के आदी हो गये हैं।

वैश्विक संस्कृति को भारतीय सामाजिक परिदृश्य में देखने पर इसका प्रभाव समाज के विभिन्न पहलुओं और सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था विशेष रूप से प्रभावित हुयी है। महिलाओं के ऊपर भूमण्डलीकरण सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। यदि हम सकारात्मक पक्ष को देखें तो एक तरफ महिलाओं के लिए विश्व मंच पर नौकरियों व उच्च वेतन उपलब्ध होने के कारण उसके आत्मविश्वास व सम्मान में वृद्धि हुयी है। वहीं दूसरी तरफ इसके फलस्वरूप जहाँ एक ओर नगरीकरण व औद्योगीकरण को बढ़ावा मिला है, वहीं भारतीय महिलाओं को रोजगार व आत्मनिर्भरता भी प्राप्त हुयी है। वे अपने को संचार के साधनों से युक्त होने के कारण विभिन्न प्रकार के महिला सेवा संघ, विविध प्रकार के संसाधन चित्रकारी, पेंटिंग, कौशल विकास आदि क्षेत्रों में अपने को मजबूती के साथ भागीदारी करने में सक्षम पाती हैं जिसके परिणामस्वरूप लोगों को सामान्यतया महिलाओं के प्रति नजरिया भी अब सकारात्मक रूप से बदल रहा है। आम आदमी भी अब महिलाओं व लड़कियों को बोझ न समझकर सहयोगी मान रहा है। दूसरी तरफ वैश्वीकरण की संस्कृति के कारण महिलाओं के ऊपर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को यदि हम देखें तो पाते है कि महिलाओं के प्रति दुर्व्यवहार घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न व आत्महत्या जैसी घटनाओं में वृद्धि हो रही है। यद्यपि महिलाओं के लिए रोजगार में वृद्धि हुई है, किन्तु उन्हें काम के मुताबिक वेतन कम दिया जाता है, और सामाजिक असुरक्षा तथा शोषण उनके कार्यस्थलों पर सदैव बना रहता है। वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को यदि देखा जाये तो आज महिला को उपभोक्ताओं रूप में देखा जा रहा है और महिलाओं के उत्पीड़न में किसी भी प्रकार की कमी देखने को फिलहाल अभी नहीं मिलती।

भूमण्डलीकरण के सांस्कृतिक पक्ष को यदि देखा जाए तो योगेन्द्र सिंह का मानना है कि "भूमण्डलीकरण हमारी संस्कृति के लिए खतरा पैदा नहीं करता क्योंकि आधुनिक भूमण्डलीकरण परम्परागत पूंजीवादी व्यवस्था से

सांस्कृतिक समूहों के बीच में एकता बढ़ी है जिसका आधार बहुआयामी अन्तःकरण की प्रक्रिया है।" अमर कुमार–"भूमण्डलीकरण के कारण परम्परात्मक शक्ति संरचना में भी परिवर्तन हुआ, नये अभिजात वर्ग के उदय के कारण जाति व्यवस्था की संरचना और उसके महत्व में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। यद्यपि परम्परा और आधुनिकता का संघर्ष हमेशा होता आया है किन्तु इसी प्रक्रिया के बीच हमारी संस्कृति पनपती और विकसित होती आयी है। किन्तु ग्लोबलाइजेशन के युग में आज जो हमें सांस्कृतिक एकरूपता देखने को मिलती है यहां यह बात ध्यान देना आवश्यक है कि क्या यह एकरूपता सांस्कृतिक उत्थान के लिए है या मानवीय मूल्यों को ह्रास की ओर ले जा रही है। इसके लिए हमें सजग रहने की जरूरत है।"

निष्कर्ष

भूमण्डलीकरण को यदि हम भारतीय परिदृश्य में देखे तो इसका सकारात्मक और नकारात्क दोनों पक्ष दिखाई देता है। वैश्विक स्तर पर भूमण्डलीकरण का असर उदारता, निजीकरण और सांस्कृतिक निकटता पर आधारित है जिसका भारत पर भी काफी असर पड़ा है। यदि आज भारत विश्व पटल पर अपनी धाक जमाने में सक्षम है तो इसके पीछे भूमण्डलीकरण की ताकत को नकारा नहीं जा सकता। यदि प्रतिक्रियावादी दृष्टिकोण से हम भूमण्डलीकरण का मूल्यांकन करेंगे तो भारतीय परिप्रेक्ष्य में यह सदैव नाकरात्मक ही लगेगा किन्तु सर्वथा यह सत्य नहीं कहा जा सकता। भूमण्डलीकरण भारतीय विकास में काफी सहयोगी रहा है, जैसे रोजगार की बात जब आती है तो अमेरिका जैसे देश में हमारे देश के युवाओं की उपस्थिति बहुत ही सराहनीय है, महिलाओं को भी विश्व फोरम पर हर जगह रोजगार के अवसर सहज ही योग्यता के अनुरूप सुलभ हैं। जहां तक हमारी सांस्कृतिक विरासत की बात है तो भारतीय संस्कृति की यही विशेषता है कि कितनी भी विविधता और जटिलता समाज में क्यों न हो हम बड़े ही सहज भाव से उसे आत्मसात कर लेते हैं। इस भूमण्डलीकरण की हमें अपनी संस्कृति की मूल प्रवृत्ति अहिंसा, दया, करूणा, क्षमा, संवेदना, शान्ति को केन्द्र में रखकर स्वीकार करना चाहिए। यदि हमारे ऊपर कोई पश्चिमी संस्कृति को थोपने की कोशिश के तो उसे बचाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *दृष्टि आई.ए.एस. नोट्स।*
2. *लेखक अमर कुमार–योगेन्द्र सिंह का समाजशास्त्र, प्रकाशन– रावत पब्लिकेशन, जयपुर–नई दिल्ली खण्ड।*
3. *.सी.बी.पी. श्रीवास्तव– भारत और विश्व के बदलते परिदृश्य किताब महल इलाहाबाद–2002।*
4. *ग्रामीण भारत में महिला सशक्तीकरण – डॉ0 सरिता सिंह, डॉ0 मधूपकुमार – आयुश्मान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली*
5. *राकेश द्विवेदीः महिला सशक्तीकरण, चुनौती एवं रणनीतियां, पूर्वाशान प्रकाशन भोपाल 2005*
6. *अहूजा राम–राइट्स आफ वूमेन, ए फेमिनिष्ट राज परसेप्षन राव पब्किेशन जयपुर*
7. *कुरूक्षेत्र पत्रिका महिला विशेषांक जनवरी 2018*